खुले सत्संग की रुपरेखा

1. खुला सत्संग एक, दो या तीन दिन का रखा जा सकता है।
2. खुले सत्संग का शुभारम्भ प्रातः या अपराह्न में स्थानीय स्थितियों के अनुसार रखा जा सकता है। इसी तरह खुले सत्संग की पूर्ति सायं या रात्रि को परिस्थितियों को देखते हुए रखी जा सकती है।
3. खुले सत्संग में प्रतिदिन तीन बैठकें होंगी। प्रथम बैठक धयान एवं भजन कीर्तन की होगी। दूसरी बैठक में श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं श्री महाराज जी के प्रवचन होंगे। तीसरी बैठक में प्रायः श्री रामायण जी का पाठ एवं श्री महाराज जी के प्रवचन होते हैं।
4. इसके अतिरिक्त सम्मिलित साधकों को प्रतिदिन 50000 का राम नाम जाप करना आवश्यक है। नाम दीक्षा का आयोजन तीन दिन के खुले सत्संग में प्रायः दूसरे / तीसरे दिन श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की बैठक के तुरन्त बाद किया जाता है। एक दिन के खुले सत्संग में भी नाम दीक्षा का आयोजन श्री अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन की बैठक के पश्चात् ही किया जाता है।
5. खुले सत्संग का मुख्य उद्देश्य नवीन साधकों की संख्या में वृद्धि के लिए; राम न ाम के प्रचार के लिए और अधिक से अधिक साधकों के लाभ के लिए है अतः खुले सत्संग में ठहरने के लिए उपलब्ध स्थान को देखते हुए, शेष स्थानीय साधकों को रात्रि में घर जाने की अनुमति होगी।
6. खुले सत्संग के भोजन में कुछ तला नहीं बनाया जाए और न ही दलिया बनाया जाए। भोजन अत्यन्त सादा, परम पूजनीय गुरुजनों को पसन्द आ सके, वैसा ही बनाया जाए। तीखापन बिल्कुल नहीं हो।

एक दिन के खुले सत्संग की रुप रेखा

क. छः घंटे का अखण्ड जाप

ख. इसके पश्चात डेढ घंटे का सत्संग जिसमें श्री अमृतवाणी संकीर्तन, भजन कीर्तन एवं प्रवचन।

ग. तत्पश्चात् नाम दीक्षा।

घ. भोजन की व्यवस्था उपरोक्तानुसार ही रहे।

ऐसे एक दिन के खुले सत्संग, कुछ शहरों में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं।

नोटः अभी जहां खुले सत्संग नहीं हुए हैं, वहां के प्रबन्धक सुविधानुसार खुले सत्संग हेतु प्रयास कर सकते हैं।